पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

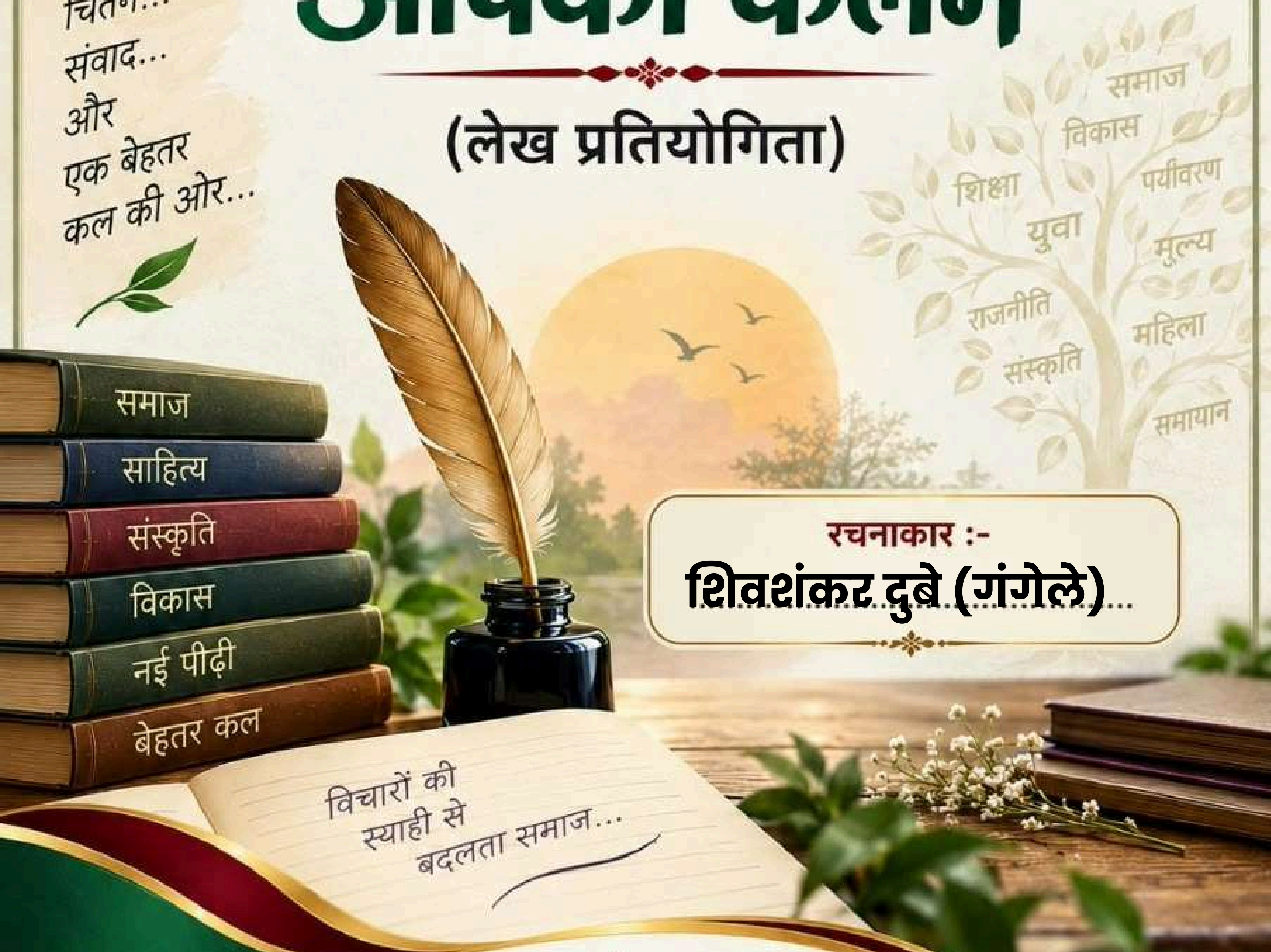

रचनाकार :-
शिवशंकर दुबे (गंगेले)

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी हमारी पहचान हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाधाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका -शिवशंकर दुबे (गंगेले)

आज की सबसे बड़ी सामाजिक समस्या:

साहित्यकार पर आलेख

आज की सबसे बड़ी सामाजिक समस्या: साहित्यकार पर आलेख

साहित्यकार का अर्थ

साहित्यकार समाज का वह संवेदनशील और प्रबुद्ध शिल्पी है, जो अपनी लेखनी के माध्यम से युग की चेतना, संवेदना और वास्तविकताओं को शब्द देता है |

संवेदनशील

साहित्यकार एक संवेदनशील व्यक्ति होता है, जो दूसरों की भावनाओं को आसानी से समझता है | किसी स्थिति में शीघ्र प्रभावित होकर दूसरे के सुख दुःख या दर्द को गहराई से महसूस करें | जैसे गरीब या लाचार व्यक्ति को देखकर रोना आ जाय या उसकी मदद करने की इच्छा प्रकट हो ,वह संवेदनशीलता कहलाती है |

प्रबुद्ध

साहित्यकार संवेदनशीलता के साथ साथ प्रबुद्ध भी होता है, अर्थात साहित्यकार हमेशा जागा हुआ रहता है,सजग रहता है, हर कार्य को बुद्धिमानी के करता है साथ ही अपने लेखन कार्य में समझदारी रखता है |

शिल्पी

साहित्यकार एक शिल्पकार की तरह होता है | जैसे एक कलाकार अपनी कला से किसी मूर्ति का निर्माण कर प्रस्तुत करता है,जो उसका स्वरूप हू बहू होता है | वैसे ही साहित्यकार अपने साहित्य को एक शिल्पी की तरह वास्तविकता के आधार पर समाज में प्रस्तुत करता है |

साहित्यकार की परिभाषा और भूमिका – समाज का दर्पण

साहित्यकार समाज के लिए एक दर्पण की तरह होता है | जैसे हम दर्पण में देखें तो जैसी हमारी तस्वीर होगी वैसे ही दिखेंगी, उसमें कोई बनावटी पन या दिखावा नहीं होता है, उसी प्रकार साहित्यकार समाज में घटित होने वाली प्रत्येक घटना को उनके सुख-दुख और उनके संघर्ष की गहराई को महसूस करता है, और उसे अपनी रचनाओं के माध्यम से ज्यों की त्यों उतारता है |

युग द्रष्टा और पथ–प्रदर्शक

एक सच्चा साहित्यकार केवल वर्तमान का ही चित्रण नहीं करता वल्कि भविष्य के लिए एक आदर्श और दिशा तय करता है |

मानवीय मूल्यों का रक्षक

साहित्यकार हमेशा मानवता अर्थात मानव के सही कर्तव्य क्या है एक आदर्श समाज के लिए स्वतन्त्रता तथा किसी भी तथ्य को स्वतंत्रता पूर्वक निडर होकर करता है | साथ ही न्याय पक्ष को मजबूत करना होता है |

आज तक हमारे पूर्व साहित्यकारों ने हमेशा मानवता, करुणा, स्वतन्त्रता और न्याय पक्ष को मजबूत किया है |

साहित्यकार का दायित्व– सच्चाई का आग्रह

साहित्यकार का सबसे बड़ा कर्तव्य होता है कि, वह समाज में यथार्थ को बिना किसी डर के निर्भीक होकर सामने लाये | जो समाज में वस्तु स्थिति है उसी को दर्शाये |

जन सरोकार

साहित्यकार की रचनाओं ,लेखन का जुड़ाव में सबसे कमजोर और अपेक्षित वर्ग से होता है अर्थात जो कमजोर वर्ग के समाज जो अच्छे मार्ग , दिशा की अपेक्षा रखते हैं उनसे जुड़ाव रखना ही सही कर्तव्य है |
जिसमें अच्छी संस्कृति और संवेदना होती है |

संवाहक

साहित्यकार अच्छी भाषा और संस्कृति को जीवित रखता है, तथा आगे आने वाली पीढ़ियों का वैचारिक समृद्धि प्रदान करता है |

साहित्यकार की परिभाषा

साहित्यकार वह होता है,जो गद्य और पद्य में साहित्य की रचना करता है |
--- जो कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक या निबंध को लिखता है |
------ जो भाषा और समाज के बौद्धिक और कलात्मक कार्यों से जुडा होता है |
------ जिस साहित्य का गहरी समझ और परख होती है |

मुख्य विशेषताएं

----- समाज, राजनीती और संस्कृति को अपनी रचनाओं में स्थान देना |
------ मानवीय भावनाओं और विचारों को कलात्मक रूप से प्रस्तुत करना |
----- भाषा, शब्दावली का सुन्दर प्रयोग करना |

साहित्य का स्वरूप

--- गद्य:-- इसमें छंद,लय, तुकबंदी की अनिवार्यता नहीं होती | जैसे उपन्यास, नाटक, कहानी, निबंध, आत्म कथा, जीवनी में सब सत्यता पर आधारित होती है |

पद्य :-- इसमें छंद,लय, तुकबंदी की प्रधानता होती है | जैसे कविता, गीत,गजल दोहा, छंद,भजन |

महत्व :---

इसमें ज्ञान और शिक्षा का स्त्रोत है | मानसिक और भावनात्मक विकास होता है | सहानुभूति और भाषा का विकास होता है |

साहित्य अपनी भाषा, इतिहास और संस्कृति की धरोहर को जीवित रखकर आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाता है |

इस प्रकार साहित्यकार समाज के लिए एक दर्पण है, आदर्श है , आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्ग दर्शक है, कमजोर वर्ग के सुख दुख का साथी होता है,जो कि इतिहास और संस्कृति को जीवित रखता है |

-शिवशंकर दुबे (गंगेले)

लेखक परिचय

नाम – शिवशंकर दुबे (गंगेले)

वारासिवनी

जिला बालाघाट

मध्यप्रदेश

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ............**शिवशंकर दुबे (गंगेले)**............जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...